SarkariExam.com

26 जुलाई 2021

1. देशभर में आज मनाया जाएगा कारगिल विजय दिवस

- 26 जुलाई, 1999 को कारगिल युद्ध में अपने प्राणों की आहुति देने वाले सैनिकों की याद में प्रत्येक वर्ष 26 जुलाई को कारगिल विजय दिवस (Kargil Vijay Diwas) के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष कारगिल विजय दिवस की 22वीं वर्षगाँठ मनाई गई है।
- आज के ही दिन वर्ष 1999 में भारतीय सैनिकों ने पाकिस्तानी घुसपैठियों और उनके वेश में छिपे पाकिस्तानी सैनिकों के कब्ज़े वाले सभी भारतीय क्षेत्रों पर जीत प्राप्त की थी। कारगिल युद्ध को 'ऑपरेशन विजय' के नाम से भी जाना जाता है।
- यह लगभग 60 दिनों तक चला तथा 26 जुलाई, 1999 को समाप्त हुआ था। यह दिवस 'ऑपरेशन विजय' की सफलता की याद दिलाता है, जिसे वर्ष 1999 में कारगिल-द्रास सेक्टर (Kargil-Dras Sector) में पाकिस्तानी घुसपैठियों द्वारा कब्ज़ा किये गए भारतीय क्षेत्रों को वापस लेने के लिये लॉन्च किया गया था। ध्यातव्य है कि इस युद्ध के दौरान भारतीय सेना ने दुर्गम बाधाओं, दुश्मन के इलाकों, विपरीत मौसम एवं अन्य कठिनाइयों को पार करते हुए विजय प्राप्त की थी।
- इस युद्ध में भारतीय सेना के बहुत से जवान शहीद और घायल हुए थे। राष्ट्र सदैव उन वीर जवानों को याद करेगा जिन्होंने अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन कर देश के लिये लड़ते हुए अपने प्राणों की आहुति दी थी।

SarkariExam.com

2. IIT कानपुर ने एंटी-ड्रोन तकनीकों के समाधान खोजने के लिए इनोवेशन हब किया लॉन्च

- हाल ही में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर ने घुसपैठ पहचान प्रणाली, एंटी ड्रोन टेक्नोलॉजी, साइबर सुरक्षा प्रणाली के लिए साइबर सुरक्षा समाधान खोजने के लिए पहला प्रौद्योगिकी नवाचार केन्द्र लॉन्च किया है।
- एक कठोर आवेदन प्रक्रिया के बाद, 25 अनुसंधान और विकास प्रमुख जांचकर्ताओं और 13 स्टार्ट-अप का चयन किया गया है। साइबर सुरक्षा में अत्याधुनिक तकनीक आम जनता के साथ-साथ उद्योग और सरकार की डिजिटल संपत्तियों की रक्षा करने के लिए आवश्यक है।
- IIT कानपुर का C3i हब साइबर स्पेस की सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित करेगा जिसमें महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचा भी शामिल होगा।
- भारत के पड़ोसी देशों जैसे चीन से बढ़ते खतरों का मुकाबला करने के लिए सरकार द्वारा मेक-इन इंडिया साइबर सुरक्षा समाधानों को बढ़ावा दिया जा रहा है। सरकार रेलवे, बैंकिंग, बिजली और दूरसंचार जैसे देशों के सभी महत्वपूर्ण क्षेत्रों के लिए मेक इन इंडिया उपकरण को बढ़ावा देने की कोशिश कर रही है।
- IIT-कानपुर का C3i Hub साइबर सुरक्षा स्टार्ट-अप के एक जीवंत पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है जो विश्व स्तर के नवाचारों के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करेगा।
- IIT कानपुर के C3iHub द्वारा समर्थित स्टार्ट-अप साइबर सुरक्षा, विकासशील सेवाओं और उत्पादों पर कई नवाचार लाएंगे और उन डिजाइनों पर ध्यान केंद्रित करेंगे जिनका उपयोग भारत के महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे की सुरक्षा के लिए किया जाएगा।
- इनमें से बड़ी संख्या में स्टार्ट-अप एंटी ड्रोन तकनीक के निर्माण पर भी ध्यान केंद्रित करेंगे, जिसे देश की सीमा पर महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे की सुरक्षा के लिए तैनात किया जाएगा। पिछले महीने, जम्मू में एक वायुसेना बेस पर ड्रोन का उपयोग करके हमला किया गया था, जिसने सरकार को ड्रोन-विरोधी तकनीक बनाने पर विचार करने के लिए प्रेरित किया।

3. विश्व धरोहर में शामिल हुआ काकतीय रुद्रेश्वर रामप्पा मंदिर

- 25 जुलाई, 2021 को तेलंगाना में स्थित काकतीय रुद्रेश्वर (रामप्पा मंदिर) मंदिर विश्व धरोहर में शामिल किया गया है। यूनेस्को ने

ऐलान किया कि भारत के तेलंगाना में स्थित काकतीय रुद्रेश्वर (रामप्पा) मंदिर को विश्व धरोहर स्थल के रूप में शामिल किया जा रहा है।

- सरकार ने इसका प्रस्ताव वर्ष 2019 में ही यूनेस्को को भेजा था। वारंगल स्थित यह शिव मंदिर इकलौता ऐसा मंदिर है, जिसका नाम इसके शिल्पकार रामप्पा के नाम पर रखा गया। काकतीय वंश के महाराज ने इस मंदिर का निर्माण 12वीं सदी में करवाया था। खास बात यह है कि इस दौर में बने ज्यादातर मंदिर खंडहर में तब्दील हो चुके हैं, लेकिन कई प्राकृतिक आपदाओं के बाद भी इस मंदिर को कोई खास नुकसान नहीं पहुंचा है। यह शोध का विषय भी रहा है।
- इसका निर्माण काकतिय नरेश राजा रूद्र देव ने 1163 ई. में करवाया था। इस मंदिर के निर्माण के दौरान बेहतर नक्काशी और उन्नत तकनीक का इस्तेमाल किया गया था। इस मंदिर का प्रभावशाली प्रवेशद्वार, हजार विशाल खम्भे और छतों के शिलालेख आकर्षण केंद्र हैं। हज़ार स्तंभो वाला मंदिर यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है और दक्षिण भारत के सबसे प्राचीन मंदिरों में से एक है।

❑ **शिव, श्रीहरि और सूर्य देवता को समर्पित है ये मंदिर**

- वारंगल का रुद्रेश्वर का एक मात्र ऐसा मंदिर है जो एक तारे के आकार का बना है। इस मंदिर की खासियत यह है कि यहां एक ही छत के नीचे तीन देवताओं की मूर्तियां स्थापित है। जिसमे शिव और विष्णु के साथ सूर्य देवता शामिल है। इसलिए इसे 'त्रिकुटल्यम' भी कहते हैं। आम तौर पर महादेव और श्री हरि के साथ ब्रह्मा की ही पूजा होती है। लेकिन यह ऐसा इकलौता मंदिर हैं जहां ब्रह्मा की जगह सूर्य देवता विराजमान हैं।

❑ **तैरने वाले पत्थरों से बना है यह मंदिर**

- करीब 900 साल पुराने इस मंदिर की अनेक विशेषताओं में एक ये भी है कि इसे तैरने वाले पत्थरों से बनाया गया है। जानकारी के मुताबिक इस मंदिर को बनाने में 40 साल लगे थे।
- यह मंदिर 6 फीट ऊंचे आधार पर खड़ा है और दीवारों पर रामायण और महाभारत की कहानी को नक्काशियों के जरिए उकेरा गया है। पुरातत्व वैज्ञानिकों के मुताबिक इस मंदिर में लगे पत्थरों के वजन काफी हल्के हैं, जिसके कारण यह पानी में भी तैर सकते हैं, लेकिन यह नहीं पता कि इस मंदिर में इस्तेमाल के लिए इन्हें लाया कहां से गया है।

4. राजस्थान ने जनजातीय समुदाय के उत्थान के लिए जनजाति भागीदारी योजना को दी मंजूरी

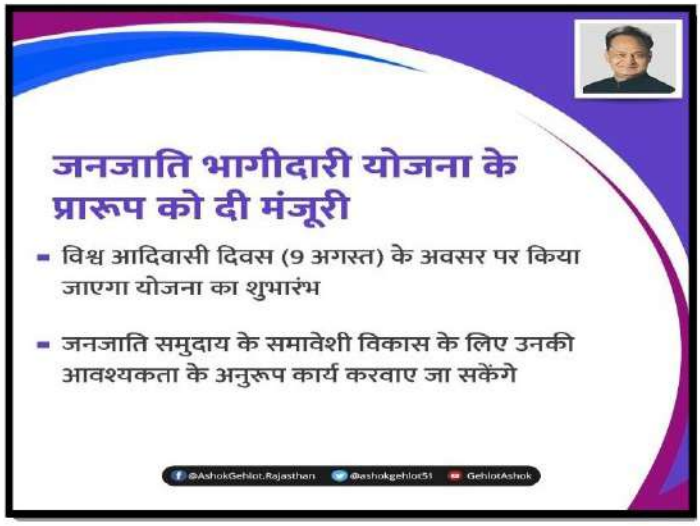

- हाल ही में राजस्थान सरकार ने राज्य के जनजातीय समुदाय के उत्थान के लिए

जनजाति भागीदारी योजना के प्रारूप को मंजूरी दी है। योजना की शुरूआत विश्व आदिवासी दिवस (9 अगस्त) पर होगी। एक सरकारी बयान के अनुसार मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने इस योजना को मंजूर दे दी है।

- इसके तहत जनजाति समुदाय के समावेशी विकास के लिए उनकी आवश्यकता के अनुरूप कार्य करवाए जा सकेंगे। इनमें सामुदायिक संपत्तियों का निर्माण एवं मरम्मत, संवर्धन और संरक्षण के साथ-साथ रोजगार सृजन, कौशल प्रशिक्षण, डेयरी, पशुपालन आदि क्षेत्रों से संबंधित कार्य शामिल होंगे।
- योजना के तहत वे कार्य ही अनुमत होंगे, जिनके माध्यम से लाभान्वित होने वाली जनसंख्या का कम से कम 50 प्रतिशत भाग जनजाति समुदाय का हो। इसमें निजी भूमि पर योजना के तहत निर्माण अनुमत नहीं होगा। इस योजना में किए जाने वाले कार्य तथा गतिविधियों के लिए जरूरी राशि का कम से कम 30 प्रतिशत हिस्सा जन सहयोग, स्वयंसेवी संस्थाओं, दानदाताओं या अन्य किसी सरकारी योजना, कार्यक्रम अथवा फंड से उपलब्ध कराना होगा।
- योजना के तहत 10 लाख रूपए तक के कार्यों की स्वीकृति जिला कलेक्टर, 10 लाख से अधिक और 25 लाख रूपए तक के कार्यों की स्वीकृति आयुक्त जनजाति क्षेत्रीय विकास तथा 25 लाख रूपए से अधिक की स्वीकृतियां जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग के स्तर से जारी की जाएंगी।

5. SuperBIT टेलीस्कोप को ऊपर उठाने के लिए स्टेडियम के आकार के हीलियम बैलून का किया जाएगा इस्तेमाल

- नासा और कनाडाई अंतरिक्ष एजेंसी SuperBIT (Superpressure Balloon-borne Imaging Telescope) नामक एक टेलिस्कोप का निर्माण कर रहे हैं। इसे हबल टेलीस्कोप का उत्तराधिकारी कहा जा रहा है।
- हाल की मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार इस टेलीस्कोप को ऊपर उठाने के लिए स्टेडियम के आकार के हीलियम बैलून का इस्तेमाल किया जाएगा, जिसे पृथ्वी के वायुमंडल के ऊपरी स्तरों पर भेजा जाना है। इसे टोरंटो विश्वविद्यालय, प्रिंसटन विश्वविद्यालय और इंग्लैंड में डरहम विश्वविद्यालय ने नासा और कनाडाई अंतरिक्ष एजेंसी के साथ मिलकर डिजाइन किया है।
- यह टेलीस्कोप पृथ्वी की सतह से 45 किलोमीटर ऊपर उठेगा और ब्रह्मांड की तस्वीरें लेगा। इसकी अनुमानित लागत 5 मिलियन अमेरिकी डॉलर है। यह हबल टेलीस्कोप को रिप्लेस कर सकता है। आपको बता दें कि हबल टेलीस्कोप अपने अंतिम पड़ाव में चल रहा है। शुरुआत में इसे 10 वर्षों के लिए बनाया गया था

लेकिन यह लगभग 3 दशकों तक फोटो लेने में कामयाब रहा है।

- **हबल स्पेस टेलीस्कोप**

- इस टेलीस्कोप का नाम खगोलशास्त्री एडविन हबल के नाम पर रखा गया है। यह वेधशाला अंतरिक्ष में स्थापित की जाने वाली पहली प्रमुख ऑप्टिकल टेलीस्कोप है और इसने अपने प्रक्षेपण (1990 में 'लो अर्थ ऑर्बिट' में) के बाद से खगोल विज्ञान के क्षेत्र में अभूतपूर्व खोज की हैं। इसे 'गैलीलियो के टेलीस्कोप के बाद खगोल विज्ञान में सबसे महत्त्वपूर्ण प्रगति' माना जाता है।
- यह नासा के ग्रेट ऑब्ज़र्वेटरीज़ प्रोग्राम का एक हिस्सा है, जिसमें चार अंतरिक्ष-आधारित वेधशालाओं का एक समूह है और प्रत्येक वेधशाला एक अलग तरह के प्रकाश में ब्रह्मांड पर नज़र रखती है। इस प्रोग्राम के अन्य मिशनों में विज़िबल-लाइट स्पिट्ज़र स्पेस टेलीस्कोप, कॉम्पटन गामा-रे ऑब्ज़र्वेटरी (CGRO) और चंद्र एक्स-रे ऑब्ज़र्वेटरी (CXO) भी शामिल हैं।

- **भारत एवं विश्व के कुछ अन्य प्रमुख टेलीस्कोप**

1. देवस्थल ऑप्टिकल टेलीस्कोप: आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (ARIES) ने 'देवस्थल ऑप्टिकल टेलीस्कोप' को सन् 2016 में उत्तराखण्ड के देवस्थल में स्थापित किया था। यह 3.6 मीटर व्यास वाली ऑप्टिकल टेलीस्कोप है। ब्रह्मांड के रहस्यों को जानने हेतु इसे भारत-बेल्जियम के संयुक्त प्रयास द्वारा स्थापित किया गया था। गौरतलब है कि आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (ARIES) भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत आता है।
2. फास्ट टेलीस्कोप: फ़ास्ट (FAST) का पूरा नाम 'फाइव हंड्रेड मीटर एपर्चर स्फेरिकल टेलीस्कोप' है। इस टेलीस्कोप को चीन के दक्षिण-पश्चिम में स्थित गुइझोऊ प्रांत में स्थापित किया गया है। इस टेलीस्कोप में 500 मीटर व्यास वाला एपर्चर है, अतः इसी कारण इसे दुनिया की सबसे बड़ी टेलीस्कोप कहा जाता है। इसकी स्थापना चीन ने सन् 2011 में की थी।
3. जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप: यह भविष्य की टेलीस्कोप है जिसे वर्ष 2021 तक अंतरिक्ष में स्थापित किये जाने की योजना है। इस टेलीस्कोप के निर्माण में तीन अंतरिक्ष एजेंसियाँ संलग्न हैं-नासा, यूरोपियन अंतरिक्ष एजेंसी और कनाडियन अंतरिक्ष एजेंसी। यह टेलीस्कोप विश्व की सर्वाधिक उन्नत अंतरिक्ष टेलीस्कोप होगी। जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप 'अवरक्त प्रकाश' पर आधारित तकनीक पर कार्य करेगी।
4. ग्रोथ-इंडिया टेलीस्कोप: यह टेलीस्कोप भारत के हनले (लद्दाख) में स्थित 'भारतीय खगोलीय वेधशाला' (Indian Astronomical Observatory) में स्थापित की गयी है। ग्रोथ-इंडिया टेलीस्कोप कई देशों (यथा-यूएसए, जर्मनी, इजराइल, जापान, यूनाइटेड किंगडम आदि) की संयुक्त पहल 'ग्रोथ' (GROWTH-Global Relay of Observatories Watching Transients Happen) का हिस्सा है। ग्रोथ पहल के तीन प्रमुख लक्ष्य हैं-बाइनरी न्यूट्रॉन के विलय की पहचान करना, सुपरनोवा विस्फोट का अध्ययन और क्षुद्र ग्रहों का अध्ययन।

6. वाइस एडमिरल विनय बधवार को मिला अलेक्जेंडर डेलरिम्पल पुरस्कार

- 23 जुलाई, 2021 को भारत के प्रमुख हाइड्रोग्राफर वाइस एडमिरल विनय बधवार को ब्रिटिश उच्चायुक्त द्वारा हाइड्रोग्राफी और नॉटिकल कार्टोग्राफी के क्षेत्रों में उनके कार्यों के लिए प्रतिष्ठित 'अलेक्जेंडर डेलरिम्पल पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है।
- बधवार को 2019 में प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित किया गया था, लेकिन कोरोना महामारी के कारण पुरस्कार समारोह में देरी हुई। एडमिरल को न केवल भारत सरकार के चीफ हाइड्रोग्राफर के रूप में बल्कि पूरे हिंद महासागर क्षेत्र में हाइड्रोग्राफी और नॉटिकल कार्टोग्राफी के विषयों में उनके अद्वितीय समर्पण, व्यावसायिकता और नेतृत्व को मान्यता प्रदान करने के लिए अलेक्जेंडर डेलरिम्पल पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।
- हिंद महासागर में कौशल और आउटपुट को जारी रखने में एडमिरल के अथक उत्साह ने पूरे क्षेत्र के लिए सुरक्षा, सुरक्षा, आर्थिक स्थिरता और विकास और पर्यावरण संरक्षण में वृद्धि की है। इस पुरस्कार के विजेता का चयन यूके हाइड्रोग्राफिक ऑफिस के मुख्य समिति द्वारा विश्व भर में हाइड्रोग्राफी, कार्टोग्राफी और नेविगेशन के मानकों को बढ़ाने के प्रयासों के लिए किया जाता है।
- 'अलेक्जेंडर डेलरिम्पल पुरस्कार' का नामकरण एडमिरल्टी के पहले हाइड्रोग्राफर के नाम पर रखा गया है और इसे 2006 में स्थापित किया गया था।

7. राजनाथ सिंह ने भारतीय सेना के स्कीइंग अभियान आर्मेक्स-21 को दिखाई हरी झंडी

- 23 जुलाई, 2021 को रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने 10 मार्च से 6 जुलाई, 2021 के बीच हिमालय पर्वत श्रृंखलाओं में आयोजित भारतीय सेना के स्कीइंग अभियान आर्मेक्स-21 (ARMEX-21) को हरी झंडी दिखाई है। आर्मेक्स-21 नामक इस अभियान को 10 मार्च को लद्दाख के काराकोरम दर्रे से हरी झंडी दिखाई गई और इसका समापन 119 दिनों में 1,660 किमी की दूरी तय करने के बाद 6 जुलाई को उत्तराखंड के मालरी में हुआ।

❑ **ARMEX-21**

SarkariExam.com

- ARMEX-21 को देश और भारतीय सेना में साहसिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए हिमालयी क्षेत्र की पर्वत श्रृंखलाओं में आयोजित किया गया था। अभियान के दौरान, टीम ने 5,000-6,500 मीटर की ऊंचाई पर कई दर्रों और ग्लेशियरों, घाटियों और नदियों के माध्यम से यात्रा की।

8. केरल के संतोष जॉर्ज होंगे भारत के पहले स्पेस टूरिस्ट

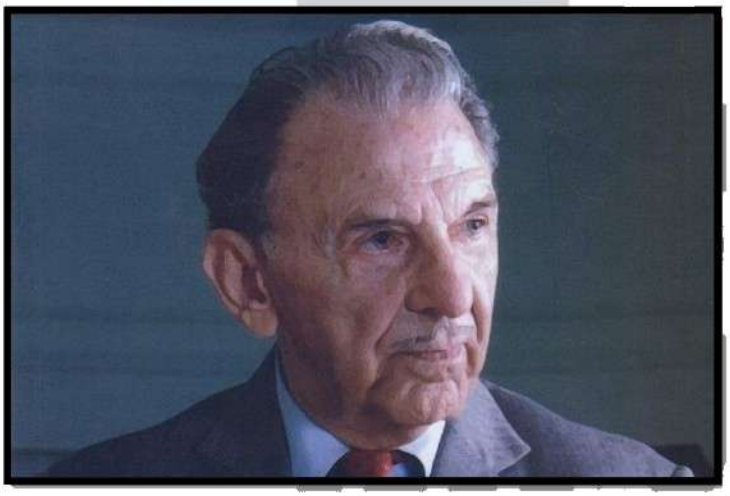

- अमेजन के फाउंडर जेफ बेजोस और वर्जिन गैलेक्टिक के रिचर्ज ब्रैनसन ने इसी महीने स्पेस की यात्रा की है। इसके साथ ही आम टूरिस्ट्स के लिए स्पेस की यात्रा का रास्ता साफ हो गया है। केरल के रहने वाले संतोष जॉर्ज कुलांगरा भारत के पहले स्पेस टूरिस्ट होंगे। एक रिपोर्ट के मुताबिक 49 वर्षीय संतोष अब तक करीब 130 देशों की यात्रा कर चुके हैं। संतोष ने मलयालम भाषा में अपनी यात्राओं का वर्णन किया है।
- रिपोर्ट के मुताबिक, संतोष ने वर्जिन गैलेक्टिक की कमर्शियल स्पेस फ्लाइट के लिए वर्ष 2007 में अपनी सीट बुक की थी। संतोष जॉर्ज एक डॉक्यूमेंट्री फिल्ममेकर हैं। संतोष का कहना है कि 2007 में उन्होंने स्पेस की यात्रा को लेकर एक ब्रिटिश अखबार में विज्ञापन देखा था। इसके बाद उन्होंने संबंधित अथॉरिटीज से संपर्क किया।
- संतोष को स्पेस की यात्रा करने के लिए कई बार इंटरव्यू और टेस्ट का सामना करना पड़ा। इसके बाद ही उन्हें स्पेस की यात्रा करने की मंजूरी मिली। वर्ष 2007 में सीट की बुकिंग के बाद उन्हें वर्ष 2010 में स्पेस की यात्रा करने की उम्मीद थी। लेकिन प्लेन क्रैश, पायलट की मौत और अन्य कारणों से इस सफर में देरी हुई। स्पेस की यात्रा करने के लिए संतोष जीरो-ग्रेविटी ट्रेनिंग भी पूरी कर चुके हैं।
- रिचर्ड ब्रैनसन की कंपनी वर्जिन गैलेक्टिक के वर्जिन स्पेसशिप ने 11 जुलाई, 2021 को स्पेस की यात्रा की है। कंपनी को 25 जून, 2021 को ही लाइसेंस मिला है। अब कंपनी बेसिक ट्रेनिंग के बाद आम लोगों को स्पेस की यात्रा करा सकती है। वर्जिन गैलेक्टिक वर्ष 2022 से कमर्शियल टूर शुरू करने की योजना बना रही है। इस यात्रा के लिए कंपनी 2.50 लाख करोड़ डॉलर करीब 1.90 करोड़ रुपए वसूलने की तैयारी कर रही है।

अंतरिक्ष में जाने वाले दुनिया के सबसे कम उम्र के एस्ट्रोनॉट बने ओलिवर डेमन

- हाल ही में अरबपति जेफ बेज़ोस ने अपने रॉकेट जहाज न्यू शेपर्ड (New Shepard) की पहली चालक दल की उड़ान में अंतरिक्ष की एक छोटी यात्रा की है। उनके साथ उनके भाई मार्क बेजोस (Mark Bezos), अंतरिक्ष अग्रणी दौड़ के 82 वर्षीय वैली फंक और एक 18 वर्षीय छात्र थे।

SarkariExam.com

- उन्होंने अंतरिक्ष में उड़ने वाली सबसे बड़ी खिड़कियों के साथ एक कैप्सूल में यात्रा की, जो पृथ्वी के आश्चर्यजनक दृश्य पेश करती है। इस उड़ान में अंतरिक्ष में जाने वाले सबसे बुजुर्ग व्यक्ति, वैली फंक और सबसे कम उम्र के छात्र ओलिवर डेमन थे।
- जब कैप्सूल 10 मिनट, 10 सेकंड की उड़ान के बाद वापस नीचे आ गया, तो जेफ बेज़ोस ने कहा: "अब तक का सबसे अच्छा दिन (Best day ever)। बेज़ोस की कंपनी ब्लू ओरिजिन (Blue Origin) द्वारा निर्मित न्यू शेपर्ड (New Shepard) को अंतरिक्ष पर्यटन के बढ़ते बाजार की सेवा के लिए डिजाइन किया गया है।
- आपको बता दे कि उन लोगों ने इस यात्रा के दौरान करमान लाइन को पार किया था। करमान लाइन समुद्रतल से 100 किलोमीट ऊपर स्थित एक काल्पनिक रेखा है जहाँ से आमतौर पर अंतरिक्ष की शुरुआत मानी जाती है।

9. भारत की सबसे उम्रदराज छात्रा भगीरथी अम्मा का हुआ निधन

- हाल ही में केरल में 105 साल की उम्र में साक्षरता परीक्षा उत्तीर्ण करने वाली महिला भगीरथी अम्मा का निधन हो गया। वह 107 वर्ष की थीं। भगीरथी अम्मा ने दो साल पहले ही 105 वर्ष की उम्र में साक्षरता परीक्षा उत्तीर्ण की थी, जिसके लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उनकी सराहना भी की थी।
- केरल के कोल्लम जिले की रहने वाली अम्मा ने 105 साल की उम्र में अपनी शिक्षा जारी रखने का फैसला किया। भगीरथी अम्मा ने वर्ष 2019 में राज्य द्वारा संचालित केरल राज्य साक्षरता मिशन द्वारा आयोजित चौथी कक्षा की समकक्ष परीक्षा में उत्तीर्ण होकर सबसे उम्रदराज छात्रा बनने का इतिहास रचा था।
- भगीरथी अम्मा राज्य साक्षरता मिशन द्वारा कोल्लम में आयोजित परीक्षा में शामिल हुई थीं और उन्होंने 275 में से 205 अंक प्राप्त कर कीर्तिमान स्थापित किया। गणित विषय में उन्हें पूरे अंक प्राप्त हुए थे।
- अम्मा ने नौ साल की उम्र में ही तीसरी कक्षा में औपचारिक शिक्षा छोड़ दी थी। महिला सशक्तिकरण की दिशा में उनके असाधारण योगदान के लिए केंद्र सरकार द्वारा वर्ष 2020 में प्रतिष्ठित नारी शक्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

10. मीराबाई चानू ने रचा इतिहास; टोक्यो ओलंपिक में वेटलिफ्टिंग में 49 किलोग्राम वर्ग में जीता रजत पदक

- 24 जुलाई, 2021 को मीराबाई चानू ने ओलंपिक के इतिहास में भारोत्तोलन (weightlifting) में भारत का पहला रजत पदक जीतकर इतिहास रच दिया है। चानू ने 49 किग्रा वर्ग में रजत पदक जीता। 26 वर्षीय मीराबाई चानू ने स्नैच में 87 किग्रा और क्लीन एंड जर्क स्पर्धा में 115 किग्रा भार उठाकर 49 किग्रा वर्ग के फाइनल में कुल 202 का स्कोर बनाया। इस रजत पदक के साथ चानू ने 2020 टोक्यो ओलंपिक में भारत का पदक खाता भी खोल दिया है।
- इस स्पर्धा में चीन की होउ झिहुई ने इस स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता, जबकि कांस्य पदक इंडोनेशिया की खिलाड़ी ने जीता। मीराबाई चानू को इस साल ओलंपिक में भारत के सबसे मजबूत पदक दावेदारों में से एक के रूप में माना जा रहा था। उन्होंने इस साल की शुरुआत में अपनी श्रेणी में 119 किग्रा भार उठाकर क्लीन एंड जर्क में विश्व रिकॉर्ड बनाया था।
- मीराबाई चानू वेटलिफ्टिंग में सिल्वर मेडल जीतने वाली पहली भारतीय बन गई है। इससे पहला कर्णम मल्लेश्वरी ने वर्ष 2000 में सिडनी ओलंपिक में वेटलिफ्टिंग में कांस्य पदक जीता था। कर्ण मल्लेश्वरी वेटलिफ्टिंग में भारत के लिए ओलंपिक पदक जीतने वाली पहली भारतीय है।

मीराबाई चानू

- मीराबाई चानू एक भारतीय भारतोलक हैं, उनका जन्म 8 अगस्त, 1994 को मणिपुर में हुआ था। चानू ने 2014 राष्ट्रमंडल खेलों में रजत पदक और 2018 राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक जीता था। 2017 में विश्व चैंपियनशिप में उन्होंने स्वर्ण पदक जीता था। जबकि 2020 एशियाई चैंपियनशिप में उन्होंने कांस्य पदक जीता था।

सुमित नागल बने ओलंपिक में टेनिस सिंगल्स मैच जीतने वाले तीसरे भारतीय

- सुमित नागल ओलंपिक खेलों में एकल पुरुष मैच जीतने वाले तीसरे भारतीय टेनिस खिलाड़ी बने। वह 25 साल में भारत के लिए जीतने वाले पहले खिलाड़ी बने। उन्होंने इस मैच में डेनिस इस्तोमिन (Denis Istomin) को हराया। नागल ने इस्तोमिन को 6-4, 6-7(6), 6-4 से हराया।
- इस मैच में दो घंटे 34 मिनट का समय लगा और यह एरिआके टेनिस सेंटर में आयोजित किया गया। अगले दौर में उनका सामना डेनियल मेदवेदेव से होगा जोदुनिया में दूसरे स्थान पर हैं।
- 1996 के अटलांटा खेलों में, जीशान अली ब्राजील के फर्नांडो मेलिगेनी को हराकर एकल मैच जीतने वाले पहले भारतीय बने थे। लिएंडर पेस पहले दौर से आगे निकलने वाले दूसरे भारतीय थे। 2012 में लंदन में आयोजित खेलों